कवि परिचय

राम और श्रीकृष्ण ने लिया जहां अवतार।
पावन उत्तर प्रान्त जो संस्कृति का आधार ॥1॥

गंगा यमुना से घिरी धरा नमन के योग्य।
पाया उस पर जन्म है जन यह यदपि अयोग्य ॥2॥

मैनपुरी जनपद सुभग समतल उर्वर हृद्य।
श्यामल पूरा ष्षस्य से जलयुत ऋतु अनवद्य ॥3॥

करहल नगर समीप ही सढ़ नामक है ग्राम।
घिरा सरोवर से जहां तुंग भवन अभिराम ॥4॥

निज कुल और स्वजन्म का देता कुछ इतिहास।
पूर्वज आशिष निधि सबल पाता नर विश्वास ॥5॥

पूर्व पुरूष आलय रहा जिनका ग्राम समान,
सढ़ नामक फिर ग्राम में आकर बसे समान ॥6॥

पाण्डेय ब्राह्मण बहुल सुविपुल ग्राम धनाढय,
तीन मिश्र परिवार युत सुविदित चरित गुणाढय ॥7॥

निर्मित आयत भवन कर रोपित शुभ अश्वत्थ,
विकिरित गुण सौरभ हुए पूर्णायुष्य दिवस्थ॥ 8 ॥

यमुनातट ब्रज भूमि में जो तरू सहित तमाल,
उगता उसके नाम पर सुत था झाऊलाल ॥9॥

उनसे जन्मे चार सुत अग्रज मिड्ढालाल,
मेघनाद बलविपुलधर सुन्दर सुन्दर लाल ॥10॥

सबसे छोटे तनय थे पण्डित होरी लाल,
प्रांशुदेह सस्मितवदन उन्नत जिनका भाल ॥11॥

लोकरीतिज्ञाता मृदुल कर्मठ कुषल विनीत,
शिव पूजक धृतक्षिप्रता जनप्रिय सदा अभीत ॥12॥

ग्राम अचलपुर वासिनी अचल स्नेह की मूर्ति,
कलावती उनको मिलीं भवर् कत्तव्यप्रपूर्ति ॥13॥

ईशकृपा फलवत हुए अंगज चार प्रसूत,
पर गिरिजा देकर चले मां को व्यथा अकूत ॥14॥

नीति-युक्ति भूषित सुमति अग्रज दाऊ दयाल,
क्षमाशील जनप्रिय सुखद सुत भगवान दयाल ॥15॥

अनुज महेश्वर विक्रमी पाकर सबका स्नेह,
रहते अति निष्चिंत हो मोद धाम था गेह ॥16॥

पर जब यह भ्रातात्रयी हुई लब्ध कैशोर्य,
गए जनक सुरधाम को प्रकट काल का क्रौर्य ॥17॥

माता किन्तु कलावती थीं अब धृति का रूप,
दृढ़िमा का प्रतिमान हो सही शीत बहु धूप ॥18॥

बड़े किये तीनों तनय शिक्षित सबल सुयोग्य,
पुन: प्रसादित मनीषा मानस लब्धारोग्य ॥19॥

निज स्वभाव प्रतिकूल अति पाया पुलिस विभाग,
किन्तु नहीं भगवान ने छोड़ा प्रभु अनुराग ॥20॥

मध्यदेश भोपाल में चिरतक रहे पदस्थ,
सत्यनिष्ठ कर्मठ कुशल हो शासन विश्वस्त ॥21॥

बैजनाथ दुहिता प्रयत ग्राम सेमरा नाम,
रामसहेली को वरा पावन हुआ सुधाम ॥22॥

सरल हृदय ममतामयी दयाद्रवित ऋतपूत,
एक पुत्र तनुजा त्रयी जिनसे हुई प्रसूत ॥23॥

प्रथमागत मिथिलेश है फिर ममता अवतार,
पुत्रि तृतीया नीरजा शैशव लीला सार ॥24॥

मुझपर यह अनुजात्रयी पुष्कल रखती स्नेह,
रहा सदा सुखशान्ति का धाम हमारा गेह ॥25॥

पिता मिले भगवान से माता रामसहेलि,
संन्तति जीवन क्यों न हो सन्तत वर्धित केलि ॥26॥

चैत्र मास तिथि चतुर्थी, शुक्ल पक्ष शनिवार।
प्रात: दसवादन समय, लिया मनुज वपु धार ॥27॥

दो सहस्त्र पन्द्रह रहा, विक्रम का वह अब्द।
पंडित होरी लाल गृह, मुखर पौत्र का शब्द ॥28॥

मेष राषि शुभ लग्न वृष, भरणी था नक्षत्र।
श्री भगवान दयाल ग्रह, उदित हुआ सत् पुत्र ॥29॥

तुला राशि गुरू राहु थे, बुध रवि थे मीनस्थ।
धनु में शनि शनि मेष में, भौम शुक्र मकरस्थ ॥30॥

उस बेला बव करण में, योग रहा विष्कुम्भ।
पीड़ा के थे विषम क्षण, शिव का था अवलम्ब ॥31॥

मध्य नाड़ि गजयोनि में, मानव गण में गण्य।
राम सहेली जननि से, उपजा व्यक्ति नगण्य ॥32॥

शिव कुमार था रख दिया, जनकाग्रज ने नाम।
अशिव कार्य उसके सदा, अनृत हुआ अभिधान ॥33॥

आयत आलय सामने पीपल की घन छांह।
चलना सीखा जहां पर पकड़ तात की बांह ॥34॥

सम्मुख सर मैं तैरते नाना वर्ण विहंग।
विस्मृति में जाते नहीं वे बचपन के रंग ॥35॥

मध्यदेश का राजपुर गिरि सर युत भोपाल।
वर्ष अठारह का यहां बीता विद्या काल ॥36॥

सर्व प्रथम रहकर सदा, शिक्षा की शुभ प्राप्त।
गुरूजन स्नेह सदा रहा, मित्रमान बहु आप्त ॥37॥

संस्कृत भाषा भारती, अर्थ शास्त्र भूगोल।
सुधामयी गुरूकृपा से, पाया ज्ञान अमोल ॥38॥

विद्यार्जन रत छात्र था, वधू मिली रत्नेश।
जीवन तब से बन गया, सुखद प्रणय रत्नेश ॥39॥

हुआ उदित आलोक फिर श्रेयस्कर श्रेयांश।
अंगज द्वय सब जीव सम उसके दिव्य प्रभांश ॥40॥

केन्द्रीय शासन का हुआ, अधिकारी उपयुक्त।
अपनी निष्ठा लगन को, किया सतत सुप्रयुक्त ॥41॥

मध्य देश कटनी नगर, मध्य किया जब कार्य।
प्रभु ने लेखन कर्म को, बना दिया अनिवार्य ॥42॥

सतत प्रेरणा शम्भु की, लिखा गई "राधेय"।
इस जन को कवि कर्म तो, रहा सदा अज्ञेय ॥43॥

चौदह सर्गों में किया, वसु का चरित निबद्ध।
मुदित देख उद्यम हुए, वांङ्गमय के तप वृ ॥44॥

जिसकी पावन कृपा ही, लिखा गई 'राधेय'।
पुन: बनाया उन्होंने "अश्वत्थामा" गेय ॥45॥

बीस शती के शेष थे, मात्र चार जब अब्द।
संयोजित होने लगे, ईश कृपा से शब्द ॥46॥

आशिष यदि देते नहीं, कवि वरेण्य विद्वान।
जलनिधि कैसे तैरता, यदि न सदय, ईशान ॥47॥

अष्टादस अध्याय में अश्वत्थामा वृत्त।
वर्णित विविध प्रकार के पन्द्रह शतक सुवृत्त ॥48॥

श्रेयस्कर मुझको हुआ अमित सितम्बर माह।
दो हजार नौ वर्ष को मिली नव सृजन राह ॥49॥

छाए मनपर देवव्रत, गंगा नन्दन भीष्म।
भास्कर सम भास्वर वृती अरि को भीषण ग्रीष्म ॥50॥

कृति विंशति सर्गात्मिका तीस कोटि के छन्द।
तेरह सौ चालीस हैं वृत्त नहीं गति भंग ॥51॥

मासपंचकालेख्य क्या ऐसे विस्तृत काव्य।
ईश कृपा से क्या नहीं जग में है संभाव्य ॥52॥

कहां तर्क युत क्षुद्र मति कहां काव्य रस क्षेत्र।
संतत कृपा अहेतुकी मुझ पर करी त्रिनेत्र ॥53॥

सज्जन को रस दायिनी बुधजन हेतु सतत्व।
पामर क्लेश विधायिका कृति परिहरित असत्व ॥54॥

यद्यपि निर्मल एक ही अविरल सुरसरि धार।
संत हंस मकरादि को फल निज मति अनुसार ॥55॥

अर्पित है मां शारदा को तीसरा प्रसून।
मति अनुभव पटुता कहां कवि कौशल अतिन्यून ॥56॥

===